Peer Reviewed Referred and
UGC Listed Journal
(Journal No. 40776)

ISSN 2277 - 5730
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

# AJANTA

Volume - IX, Issue - I,
January - March - 2020
HINDI PART - I

Impact Factor / Indexing
2019 - 6.399
www.sjifactor.com

Ajanta
Prakashan

Scanned with CamScanner

ISSN 2277 - 5730
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

# AJANTA

Volume - IX Issue - I January - March - 2020

HINDI PART - I

Peer Reviewed Referred
and UGC Listed Journal

Journal No. 40776

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING
2019 - 6.399
www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖
Asst. Prof. Vinay Shankarrao Hatole
M.Sc (Maths), M.B.A. (Mktg.), M.B.A. (H.R.),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod. & Dir.), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖

Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

Scanned with CamScanner

# CONTENTS OF HINDI PART - I


| अ.क्र. | शोधालेख एवं शोधकर्ता | पृष्ठ क्र. |
|---|---|---|
| १४ | आधुनिक जनसंचार माध्यम और हिंदी<br>प्रा. बी. टी. शेळके | ६५-६६ |
| १५ | जनसंचार माध्यमों में हिंदी भाषा<br>प्रा. अनुराधा नामदेवराव शिंदे | ६७-६८ |
| १६ | प्रयोजनमूलक हिंदी का स्वरूप एवं विशेषताएँ<br>डॉ. राम सदाशिव वडे | ६९-७१ |
| १७ | विज्ञापन और समाज<br>प्रा. डॉ. एम. बी. बिराजदार | ७२-७६ |
| १८ | हिंदी भाषा अनुवाद के क्षेत्र<br>सुनिल सोपानराव शिंदे | ७७-८१ |
| १९ | विज्ञापन : रोजगार की नई राह<br>डॉ. हणमंत पवार | ८२-८६ |
| २० | विज्ञापन और समाज<br>प्रा. डॉ. रेविता बलभीम कावळे | ८७-९० |
| २१ | संगणक युग में हिन्दी<br>डॉ. सुब्राव नामदेव जाधव | ९१-९५ |
| २२ | जनसंचार माध्यमों में हिंदी<br>डॉ. गुलाब राठोड | ९६-१०० |
| २३ | प्रयोजनमूलक हिन्दी : विविध आयाम<br>कुमार सुविध धारवाडकर | १०१-१०७ |
| २४ | बैंकिंग क्षेत्र में हिंदी की उपादेयता<br>डॉ. नामदेव गौडा | १०८-११४ |
| २५ | प्रयोजनमूलक हिन्दी के विविध रूप<br>लक्ष्मी बाकेलाल यादव | ११५-१२२ |
| २६ | राजभाषा हिन्दी एवं रोजगार के अवसर<br>डॉ. शकुंतला एन. गौडा | १२३-१२८ |


Scanned with CamScanner

VOLUME - IX, ISSUE - I - JANUARY - MARCH - 2020
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 6.399 (www.sjifactor.com)

# १८. हिंदी भाषा अनुवाद के क्षेत्र

**सुनिल सोपानराव शिंदे**
स्वा. रा. ती. महाविद्यालय, परळी रोड, अंबाजागाई जि. बीड ।

**भूमिका**

आज की दुनिया में अनुवाद का क्षेत्र बहुत व्यापक है। आधुनिक युग में जहाँ–जहाँ ज्ञान विज्ञान के नए–नए क्षेत्र खुल रहे हैं, वहाँ अनुवाद विज्ञान का महत्त्व स्वयंसिध्द है। सारी दुनिया को एक करने में, मानव–मानव को एक–दूसरे के निकट लाने में, मानव जीवन को अधिक सुखी और संपन्न बनाने में अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका है। अनुवाद करने का तात्पर्य है, दो भाषाओं की बाह्य भिन्नताओं की तह में जाकर मानवीय अस्तित्व के समान तत्त्वों को प्रकाश में लाना। अनुवाद के क्षेत्रों को जानने से पहले अनुवाद को जान लेना आवश्यक होता है।

**अनुवाद : व्युत्पति एवं अर्थ**

अनुवाद शब्द संस्कृत का तत्सम शब्द है। अनुवाद शब्द 'अनु' उपसर्ग तथा 'वाद' प्रत्यय के संयोग से बना है। 'वाद' शब्द संस्कृत के 'वद' धातु से बना है, जिसका अर्थ 'बोलना' या 'कहना' होता है। 'वद' धातु में 'धत्र' प्रत्यय लगने से 'वाद' बनता है, और फिर उसमें 'पीछे', 'अनुवर्तित' आदि अर्थो में प्रयुक्त 'अनु' उपसर्ग जुड़ने से "अनुवाद" शब्द बनता है। इस प्रकार अनुवाद का शाब्दिक अर्थ होगा कहने या बोलने के बाद बोलना। अनुवाद को अंग्रेजी भाषा में TRANSLATION कहते हैं। TRANSLATION शब्द लैटिन शब्द TRANS तथा LATION शब्दों के योग से बना है।TRANS का अर्थ 'पार' तथा LATION का अर्थ 'ले जाने की क्रिया' होता है। इस प्रकार TRANSLATION का व्युत्पातिक अर्थ हुआ 'परिवहन', या 'एक स्थान बिंदु से दूसरे स्थान बिंदु पर ले जाना'। न्यूमार्क के अनुसार–"अनुवाद एक ऐसा शिल्प है जिसमें एक भाषा में व्यक्त संदेश के स्थान पर दूसरी भाषा के उसी संदेश को प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाना।"[1] वही डॉ. कृष्ण कुमार गोस्वामी कहते हैं–"एक भाषा में व्यक्त भावों या विचारों को दूसरी भाषा में समान रूप से व्यक्त करने प्रयास अनुवाद है।"[2] अतः हम कह सकते है कि अनुवाद वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा हम एक भाषा के विचारों को दूसरी भाषा में व्यक्त करते हैं। जिस भाषा से अनुवाद किया जाता है उसे 'स्रोत भाषा' तथा जिस भाषा में अनुवाद किया जाता है उसे 'लक्ष्य भाषा' कहते हैं।

**अनुवाद के क्षेत्र**

भारतीय तथा विश्व साहित्य अनुवाद का बहुत व्यापक क्षेत्र है। वैसे देखा जाए तो अनुवाद के मुख्य दो क्षेत्र हैं– 1. साहित्यिक क्षेत्र, 2. साहित्येत्तर क्षेत्र।

**अ. साहित्यिक क्षेत्र**

भारत बहुभाषीक देश है। इस देश में संविधान की धारा 351 अनुसूची 8 के अंतर्गत 22 राष्ट्रीय भाषाएँ हैं। इन भाषाओं में उच्य कोटि का साहित्य लिखा गया है। अनुवाद के द्वारा बंगला भाषा के श्रेष्ठ उपन्यास हिंदी, मराठी भाषा में अनुदित हो रहे हैं। इसके साथ ही वैज्ञानिक तरक्की के कारण आज पूरा विश्व एक दूसरे से नजदीक आ



Scanned with CamScanner

रहा है। संसार की श्रेष्ठ कृतियों का अन्य भाषाओं में अनुवाद हो रहा है। इस कारण एक देश के लोग दूसरे देश के लोगों के साथ भावात्मक तथा वैचारिक स्तर पर एक दूसरे के साथ लगाव महसूस कर रहे हैं। भारतीय साहित्य की कल्पना को साकार करना है तो समस्त भारतीय भाषाओं की रचनाओं जैसे–नाटक, कविता, कहानी, निबंध, उपन्यास, आत्मकथा, जीवनी, रेखाचित्र, संस्मरण, डायरी पत्र, रिपोर्ताज आदि का अनुवाद करना आवश्यक है। प्रत्येक भारतीय भाषाओं की सभी श्रेष्ठ रचनाएँ अनूदित होकर एक भाषा से दूसरी भाषा में जानी चाहिए। यह कार्य अनुवाद के द्वारा ही हो सकता है। हिंदी के प्रसिद्ध साहित्यकार प्रेमचंद ने पहले उर्दू में लिखा उपन्यास 'बाजारे हुस्न' का हिंदी अनुवाद 'सेवासदन' नाम से किया। मराठी के खाण्डेकर, बंगाली के बंकिम, शरद, ताराशंकर, विमल मित्र, उर्दू के कृष्णचंदर, पंजाबी की अमृता प्रीतम आदि अनुवादों से भारतीय बन जाते हैं। प्रेमचंदजी ने पण्डित नेहरू ने अपनी पूत्री इन्दिरा को लिखे अंग्रेजी पत्रों का हिंदी और उर्दू में अनुवाद किया था, जिसे नेहरू ने बहुत सराहा था। स्रोत भाषा का ज्ञान और लक्ष्यभाषा पर अधिकार ही इन गद्य विधाओं के अनुवादों को स्तरीय बना सकता है। विश्व की सारी भाषाओं के समस्त साहित्य का हर भाषा में अनुवाद हो जाए तो मनुष्य जाति सांस्कृतिक, वैचारिक और संवेदनात्मक दृष्टि से कितनी समृध्द हो जायेगी, इसका अनुमान नहीं किया जा सकता। अतः अनुवाद का क्षेत्र है विश्व की समृध्द भाषाओं के समृध्द साहित्य का अनुवाद करना।

**आ. साहित्येत्तर क्षेत्र**

साहित्य के अतिरिक्त जीवन के ऐसे अनेक क्षेत्र है, जहाँ अनुवादों की आवश्यकता होती है। साहित्येत्तर विषयों का क्षेत्र बहुत व्यापक है, किन्तु उन सबके लिए अनुवाद का एक ही रूप, प्रकार, या शैली उपयुक्त नहीं होती। इस क्षेत्र में जो पाठ मिलते हैं उनकी उपनी आवश्यकताएँ एवं विशेषताएँ होती है। इसमें कुछ पाठ सैध्दांतिक तो कुछ व्यावहारिक होते हैं। अनुवाद के साहित्येत्तर क्षेत्रों के अंतर्गत निम्नलिखित क्षेत्र आते हैं।

**1. वाणिज्य और व्यापार :–** वाणिज्य से संबंधित पाठों के अनुवाद को वाणिज्य अनुवाद कहते हैं। इसमें अनेक व्ययसाय आते हैं इसलिए इसे 'व्यावसायिक अनुवाद' भी कहते हैं। भिन्न–भिन्न उद्योग व्यवसाय, व्यापारिक प्रतिष्ठाण, बैंक, और विज्ञापन के क्षेत्र इसमें महत्वपूर्ण हैं। वाणिज्य अनुवाद की तकनीक और शैलियाँ इन क्षेत्रों के अनुसार होती है। वाणिज्य का संबंध ग्राहक से होने के कारण विज्ञापन, फिल्म, पर्यटन, आदि क्षेत्रों में अनुवादक कल्पनाशीलता में भी काम ले सकता है। बैंक, दुरसंचार, रेलविभाग, जैसे क्षेत्रों में जनभाषा में प्रयोग का आग्रह बढ़ता जा रहा है। भारत में उद्योग एवं व्यापार का क्षेत्र अत्यंत संमृध्द है। यहाँ के बड़े उद्योग विदेशी संस्थाओं से संबंध रखते हैं। उन संस्थाओं से पत्राचार करना पड़ता है। व्यापार के क्षे़त्र में पत्राचार के अलावा संस्थाओं का तुलनापत्र, उपयोग का सर्वेक्षण, सरकारी उत्पादन शुल्क, आयात शुल्क, निर्यात शुल्क, आयात–निर्यात की पूरी सूची आदि का अनुवाद करना पड़ता है। व्यापारी संस्थाओं के अनुवादक को अपनी संस्था के माल का विज्ञापन अनेक भाषाओं में अनूदित करना पड़ता है।

**2. शिक्षा क्षेत्र :–** शिक्षा में अनुवाद की प्रधान आवश्यकता होती है। पाठ्य सामग्रियों का अनुवाद शोधग्रंथों और शिक्षण आदि में अनुवाद की आवश्यकता अधिक होती है। शिक्षा क्षेत्र में विज्ञान और तकनीकी का साहित्य प्रायः अंग्रेजी और अन्य पाश्चात्य भाषाओं से अनुदित किया जाता है। आधुनिक युग विज्ञान और तकनीकी का प्रौद्योगिकी युग है। इस ज्ञान को अनुवाद से अपनी भाषा में ले आना देश के विकास के लिए आवश्यक है। इस



Scanned with CamScanner

विषय का अनुवाद प्रशिक्षित निपुण व्यक्ति ही कर सकता है और दूसरा उपयोग भी इस विषय के पण्डितों और छात्रों के लिए होता है। यह विशेषज्ञों का क्षेत्र है। वैज्ञानिक अनुवाद की भाषा वस्तुनिष्ठ और तथ्यपरक होनी चाहिए। उसमें स्पष्टता, निःसंदिग्धता, अनालंकारिकता और निर्वैयक्तिकता होनी आवश्यक होती है। विज्ञान एवं तकनीकी क्षेत्रों के संस्थाओं में जो पूर्णकालिक अनुवाद हो रहा है वे उक्त शोध कार्य का अनुवाद कर रहे हैं। सामान्य रूप से विज्ञान एवं प्रौद्यागिकी केंद्रों के अनुवादक सामान्य वैज्ञानिक विषयों के विद्वान होते हैं। ये ही अनुवाद विशेष अध्ययन अध्यवसाय एवं अनुभव से विशिष्ट क्षेत्र की विशिष्ट सामग्री के कुशल अनुवाद बन जाते हैं।

**3. ज्ञान–विज्ञान का क्षेत्र :–** समस्त ज्ञान राशि का संचय साहित्य होता है। इसके अंतर्गत ज्ञान देने वाली अनेक भाषाएँ आ जाती है। ज्ञानात्मक साहित्य के भी मुख्यतः दो पक्ष हैं, जिनके अनुसार अनुवाद के क्षेत्र और स्वरूप भिन्न हो जाता है। इनमें पहला पक्ष है, परिचयात्मक साहित्य। इसके अंतर्गत विभिन्न उपयोगी वस्तुओं के साथ उपलब्ध कराये जाने वाले परिचय पत्र, जो अपने देश में प्रायः अंग्रजी में होते हैं। समाचार एजेन्सियों से प्राप्त होने वाले समाचार, अखबारों में छपने वाले विज्ञापन और विज्ञाप्तियाँ जैसी अनेक चीजें आती है। ज्ञानात्मक साहित्य का दूसरा पक्ष है समाज विज्ञान संबंधी साहित्य। इसके अंतर्गत इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, ́दर्शनशास्त्र, ऐसे विषयों के साहित्य का अनुवाद शामिल होगा। तीसरा पक्ष है प्राकृतिक विज्ञान जिसके अंतर्गत गणित, भौतिकी, रासायनिकी, जैविकी आदि विषयों के साहित्य में अनुवादक की आवश्यकता पड़ती है।

**4. जन–संचार माध्यम क्षेत्र :–** अनुवाद का सबसे बड़ा क्षेत्र संचार माध्यम है। आज समाचारपत्र, आकाशवाणी, दूरदर्शन, महत्वपूर्ण तथा लोकप्रिय संचार माध्यम है। राष्ट्रीय समाचार पत्र पूरे संसार की ताजी खबरें एवं सूचनाएँ हमें पहुँचाते हैं। देश विदेश की विभिन्न भाषाओं में निकलने वाली खबरें अनूदित होकर ही समाचारपत्र में छपती है। राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय स्तर पर जो समाचार एजेन्सियाँ होती हैं, वे अनुवादक नियुक्त करके शीघ्रतिशीघ्र ताजी खबरों का अनुवाद करा लेती है। दैनिक समाचार पत्रों के साथ–साथ साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक,एवं वार्षिक पत्रिकाएँ होती हैं एवं विभिन्न क्षेत्रों के विषयों की होती है। वाणिज्यिक विषयों की, चिकित्सा विज्ञान की, खेती की स्त्रियों की एवं फिल्मों की पत्रिकाएँ भी होती है। इन पत्रिकाओं में दुनिया भर की सामग्री होती हैं और यह सामग्री अनुवादकों के द्वारा ही इन पत्रिकाओं को मिलती हैं। दुरदर्शन का विभाग नेटवर्क अत्यत्य व्यापक है। इसके कई चैनल अपने कार्यक्रम प्रसारित करते हैं। विभिन्न भाषाओं में कार्यक्रमों के प्रसारण के लिए उन्हें अनुवाद का ही सहारा लेना पड़ता है। दूरदर्शन में अनुवादकों की काफी संख्या होती है।

**5. विधिक या न्यायालयीन क्षेत्र :–** न्याय और कानून संबंधी सामग्री के अनुवाद को विधिक अनुवाद कहा जाता है। न्यायालय के मुकद्दमे, न्याय के ग्रंथ, न्यासंहिताएँ, नियम–अधिनियम, आदि का अनुवाद इस क्षेत्र में होता है। भारत के न्यायालय की भाषा समय–समय पर बदलती रहती है। मुस्लिम शासनकाल में न्यायालय के अंतर्गत उर्दू भाषा का प्रयोग होता था। उसके बाद अंग्रेजों के जमाने में अंग्रेजी भाषा का वर्चस्व रहा। आजादी के बाद न्यायालयों में प्रादेशिक भाषाओं का प्रयोग किया जाने लगा है। आज भी कुछ वकील अंग्रेजी में पैरवी करते हुए दिखायी देते हैं। न्यायालय के अंतर्गत जो दस्तावेज होते हैं वे भिन्न–भिन्न भाषाओं में होते हैं। इन दस्तावेजो का अनुवाद करना पड़ता है एवं उसका अनुवाद अंग्रेजी में किया जाता है। कानुन की वाक्यरचना प्रायः जटिल होती है, अतः अनुवाद में सावधानी से काम लेना पड़ता है।



Scanned with CamScanner

**6. सांस्कृतिक एवं कलागत क्षेत्र :–** भारतीय संस्कृति प्राचीन है। राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रिय स्तर पर संस्कृति एवं कला के क्षेत्र में संबंध स्थापित करने हेतु अनुवाद अहम् भूमिका निभा सकते हैं। भारत के प्रत्येक प्रांत की अपनी संस्कृतिक भाषा की कलागत विशेषताएँ हैं। इनका ज्ञान भारत के दूसरे प्रांतो में कराना है तो अनुवाद के जरिए कराया जा सकता है। ठीक इसी प्रकार भारत तथा विदेश के हर राष्ट्र की संस्कृति तथा कला एक दूसरे से भिन्न है। अगर इनका एक–दूसरे से परिचय कराना है तो अनुवाद ही करा सकता है।

**7. प्रशासन क्षेत्र :–** स्त्रोत भाषा की प्रशासन से संबंधित सामग्री का लक्ष्य भाषा में अनुवाद प्रशासनिक अनुवाद है। प्रशासनिक अनुवाद को कार्यालयीन अनुवाद भी कहा जाता है। प्रशासन की बहुत सारी शाखाएँ हैं। इनमें विदेश विभाग, कूटनीति–विभाग, गुप्तचर विभाग, पुलिस विभाग आदि आते हैं। इन विभागों को विदेशी भाषा से काम करना पड़ता है। प्रमाणपत्र, दस्तावेज आदि विदेशी भाषाओं में होते हैं। इन सबको अनूदित करना पड़ता है। देश में भी प्रशासन के अनेक विभाग होते हैं। एक विभाग का दूसरे विभाग से संपर्क स्थापित करना पड़ता है। राज्यों में देशी भाषाओं में और केंद्र में हिंदी में प्रशासन का कारोबार चले इसके लिए प्रयास होते रहे हैं। ऐसे समय कार्य का विवरण दूसरे प्रांतों को या केंद्र को पहुँचाना होता है तो वहाँ अनुवादकों की सेवा लेनी पड़ती है।

**8. पर्यटन क्षेत्र :–** विदेशी पर्यटकों के साथ वार्तालाप करने के लिए होटलों, पर्यटन स्थलों आदि जगहों पर अनुवाद की आवश्यकता पड़ती है। अनुवादक पेशे का सबसे महत्वपुर्ण केंद्र पर्यटन का क्षेत्र है। प्रत्येक देश के प्रमुख नगरों में अंतरराष्ट्रीय पर्यटन कराने वाली एजेन्सियाँ होती हैं, जिनमें अनुवादक या दुभाषिए होते हैं। इनको स्थानीय भूगोल, संस्कृति, सम्यता, एवं इतिहास की अच्छी जानकारी रखनी पड़ती है।

**9. अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र :–** विश्व की संघठन चुनाओं में कुछ अवसरों पर दुनिया भर के प्रतिनिधि आते हैं। वे अपना वक्तव्य अपनी भाषा में ही देते हैं। वक्ता जिस भाषा में अपना वक्तव्य देता है,उस देश का अनुवादक उसी देश की भाषा में उसका अनुवाद प्रस्तुत करता है। प्रत्येक देश दूसरे देश में अपने राजदूत भेजता है। वहाँ उनका उपना कार्यालय होता है। ये राजदूत अपने विचारों को अपनी भाषा में प्रस्तुत करते हैं। अतः संबंधित देश में उनके विचारो को स्पष्ट करने के लिए अनुवाद की व्यवस्था की जाती है। इतना ही नहीं दो देश के मध्य पारंपारिक समझ और मित्रता को बढ़ाने में भी अनुवाद की प्रमुख भुमिका रहती है।

**10. धार्मिक क्षेत्र :–** हर देश में हर जाति धर्म के लोग रहते हैं। हर धर्म की अपनी अपनी मान्यताएँ होती है। अपने धर्म का प्रचार प्रसार करने के लिए यह लोग पूरे विश्व में भ्रमण करते रहते हैं। ऐसे समय में उन्हें अनुवादकों की आवश्यकता पड़ती है। भारत में अनेक धर्म है, प्रत्येक धर्म की अपनी भाषा है उस धर्म के अनुयायी ही उसकी भाषा का ज्ञान रखते हैं। किसी एक धर्म के ज्ञान को दूसरे धर्म के लोगों को प्राप्त कराना है तो यह अनुवाद के द्वारा ही संभव है। कुछ धार्मिक एवं दार्शनिक संस्थाएँ अपने धर्म, सिध्दांत एवं दर्शन को पत्रिकाओं में नियमित रूप से अंग्रेजी में प्रकाशित करती रहती है। ये संस्थाएँ भी अनुवादकों का महत्त्व स्वीकार करती है। अंत: महेंद्र सिंह राणा कहते है की– ''वर्तमान समय वैश्विकरण का है और एक देश दूसरे देश से आर्थिक, राजनीतिक, शैक्षिक व तकनीकी रूप से जूड़े हुए हैं। इन समस्त माध्यमों को जोड़ने के लिए भाषा एक आवश्यक माध्यम होती है। विश्व के अनेक देशों में भिन्न–भिन्न भाषाएँ बोली जाती हैं। यह भिन्नता अंतराष्ट्रीय, राष्ट्रीय व क्षेत्रीय स्तर पर भी पाई जाती है और एक देश दूसरे देशों से राजनीतिक, शैक्षिक,तकनीकी एवं आर्थिक सूचनाओं का आदान प्रदान



Scanned with CamScanner

अपने राष्ट्र को संपन्न बनाने के लिए करते हैं। वहाँ अनुवाद की आवश्यकता होती है।'[3] अनुवाद के बिना हम विश्व के समस्त देशों से आत्मिक, व्यावहारिक एवं भावनात्मक रूप से नहीं जुड़ पांएगे। अतः इस जुड़ाव के लिए अनुवाद आवश्यक हो जाता है, जिसमें भाषाई विभिन्नताएँ समस्या नहीं बने और हम वसुदैव कुटुंब के आदर्श को स्थपितकर सके।

**संदर्भ सूची**

१. डॉ. विनोद गोदरे, 'प्रयोजनमूलक हिंदी', से उध्दृत, पृ.१२२
२. डॉ. अंबादास देशमुख, 'प्रयोजनमूलक हिंदी : अधुनातन आयाम',पृ.४७६
३. डॉ. महेन्द्र सिंह राणा, 'प्रयोजनमूलक हिंदी के आधुनिक आयाम', पृ.१४४

Scanned with CamScanner

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

Impact Factor – 6.625

E-ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

# RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

January 2021

Special Issue 259 (B)

## वैश्विक परिदृश्य में भारतीय भाषाएं, संस्कृति और साहित्य की पारस्पारिकता

Guest Editor -
Dr. Babasaheb M. Gore,
Principal,
Janvikas Mahavidyalaya Bansarola,
Tq.- Kaij, Dist.- Beed

Executive Editors :
Prof. Dr. Murlidhar A. Lahade
Dr. Gopal S. Bhosale
Dr. Ramesh M. Shinde
Dr. Arvind A. Ghodke

Chief Editor : Dr. Dhanraj T. Dhangar

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

Scanned with CamScanner

Impact Factor – 6.625 E-ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

# RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL
January 2021
Special Issue 259 (B)

## वैश्विक परिदृश्य में भारतीय भाषाएं, संस्कृति और साहित्य की पारस्पारिकता

**Guest Editor -**
Dr. Babasaheb M. Gore,
Principal,
Janvikas Mahavidyalaya Bansarola,
Tq.- Kaij, Dist.- Beed

**Executive Editors :**
Prof. Dr. Murlidhar A. Lahade
Dr. Gopal S. Bhosale
Dr. Ramesh M. Shinde
Dr. Arvind A. Ghodke

**Chief Editor :** Dr. Dhanraj T. Dhangar

*Our Editors have reviewed papers with experts' committee, and they have checked the papers on their level best to stop furtive literature. Except it, the respective authors of the papers are responsible for originality of the papers and intensive thoughts in the papers. Nobody can republish these papers without pre-permission of the publisher.*

*- Chief & Executive Editor*

SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS
For Details Visit To : www.researchjourney.net

*Cover Photo (Source) : Internet

© All rights reserved with the authors & publisher

Price : Rs. 1000/-



Scanned with CamScanner

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) – 6.625 (2019),
Special Issue -259 (B) 'वैश्विक परिदृश्य में भारतीय भाषाएं, संस्कृति और साहित्य की पारस्परिकता'
Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
Jan. 2021

# अनुक्रमणिका


| अ.क्र. | शीर्षक | लेखक/लेखिका | पृष्ठ क्र. |
|---|---|---|---|
| 1 | उत्तर भारत की रामलीला की विशेषताएं | डॉ. अमिला दमयंती | 07 |
| 2 | वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी भाषा | प्रधानाचार्य डॉ. बाबासाहेब गोरे | 10 |
| 3 | प्रतिरोध की आत्माभिव्यक्ती : शिकंजे का दर्द | डॉ. रमेश शिंदे | 14 |
| 4 | हिंदी उपन्यासो में आदिवासी विमर्श | डॉ. के. बी. गंगणे | 19 |
| 5 | हिंदी कहानियों में किन्नर विमर्श | डॉ. विरश्री आर्य | 22 |
| 6 | हिंदी साहित्य में दलित चेतना | डॉ. विश्वनाथ भालेराव | 26 |
| 7 | भारत के सांस्कृतिक संघर्ष में दलित साहित्य की भूमिका | प्रा. किरण भोसले | 29 |
| 8 | मराठी लेखक श्रेणीक अन्नदाते की कहानियों में व्यक्त जैन जीवन | डॉ. महावीर उदगीरकर | 33 |
| 9 | वैश्विकरण और बाजारवाद के दौर में हिंदी की बदलती भूमिका | डॉ. यशोदा मेहरा | 37 |
| 10 | हिंदी की वैश्विक स्थिति | डॉ. रेविता कावळे | 40 |
| 11 | भारतीय संस्कृति तथा प्राचीन साहित्य | डॉ. कुमारी प्रेमलता | 43 |
| 12 | 'जूठन' आत्मकथा में दलित विमर्श | अमृता तौर, डॉ. बी . आर. नळे | 47 |
| 13 | भारत की धार्मिक एंव व्यापारिक यात्राएं : धर्म संस्कृति एंव भाषाओं की संवाहक | डॉ. संदीप कालभोर | 50 |
| 14 | समकालीन हिंदी उपन्यासों में किन्नर विमर्श | डॉ. अमरनाथ तिवारी | 53 |
| 15 | हिंदी साहित्य की महिला प्रवासी साहित्यकार | डॉ. द्वारका गीते - मुंडे | 57 |
| 16 | विश्व साहित्य में प्रवासी हिंदी साहित्य का योगदान | डॉ. अमित शुक्ल | 60 |
| 17 | स्त्री विमर्श का सौदर्य : जोतिबा फुले | छत्रसींग तडवी | 64 |
| 18 | कृष्णा सोबती के उपन्यासो में नारी का संघर्ष | डॉ. गजानन बने | 67 |
| 19 | छायावादी काव्य में सांस्कृतिक चेतना | डॉ. ज्ञानेश्वर गाडे | 69 |
| 20 | लोकसाहित्य में लोकगीतों का महत्व | डॉ. नरसिंगदास बंग | 72 |
| 21 | सांस्कृतिक पर्व और मुस्लिम कथाकार | डॉ. यतींद्र सिंह | 75 |
| 22 | आदिवासी जन-जीवन एवं वर्तमान शिक्षा व्यवस्था | डॉ. मो. माजिद मियाँ | 79 |
| 23 | मराठी दलित साहित्य का हिंदी साहित्यपर प्रभाव | डॉ. सुधीर वाघ | 84 |
| 24 | वैश्विक परीदृश में भारतीय संस्कृति और साहित्य : हिंदी उपन्यासों के संदर्भ में | डॉ. कल्पना पाटोळे | 87 |
| 25 | भारतीय संस्कृति और साहित्य | डॉ. अंजली कायस्था | 90 |
| 26 | भारतीय संस्कृति और साहित्य | विनिता कुमार | 95 |
| 27 | भारतीय संस्कृति व संस्कार | डॉ. सुषमा पुरवार | 98 |
| 28 | भारतीय संस्कृति और साहित्य | डॉ. अनिता प्रजापत | 102 |
| 29 | भारतीय संस्कृति और साहित्य | डॉ. राम खलंग्रे | 105 |
| 30 | समकालीन आदिवासी कविता के नये स्वर | डॉ. अनिलकुमार राठोड, प्रा. हिरामण टोंगारे | 109 |
| 31 | आदिवासी लोकसाहित्यातील स्त्री -जीवनाचा समाजशास्त्रीय अभ्यास | डॉ. गंगाराम सुरेवाड | 113 |
| 32 | भारतीय संस्कृति एवं साहित्य | डॉ. अमिता श्रीवास्तव | 117 |
| 33 | भारतीय संस्कृति और साहित्य | प्रा. सुनील शिंदे | 121 |
| 34 | कृष्णा सोबती की कहानियों में व्यक्त नारी समस्याएं | डॉ. वंदन जाधव | 123 |




Scanned with CamScanner

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.625 (2019),
Special Issue -259 (B) 'वैश्विक परिदृश्य में भारतीय भाषाएं, संस्कृति और साहित्य की पारस्पारिकता'
Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
Jan. 2021

# भारतीय संस्कृति और साहित्य

प्रा.शिंदे सुनिल सोपानराव
यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, अंबाजोगाई.
Email : Shindesunil1882@gmail.com

भारतीय साहित्य और संस्कृति हमारे जीवन के दो सुंदर पहलू हैं। जिनको हम सभी अपने जीवन में अपनाते है। साहित्य और संस्कृति का भारत में बहुत बड़ा अधिक महत्व है। एक ओर संस्कृति में हम सब बंधे हुए है जबकी साहित्य हमारे जीवन में रंग भरता है। साहित्य मानव की जिंदगी को दर्शाता है, साहित्य हमारी संस्कृति को दर्शाता है। साहित्य हमें अच्छा–बुरा,पाप–पुण्य समझाता है।

भारतीय साहित्य में संस्कृति को समझने के लिए पहले साहित्य को समझना आवश्यक होता है। साहित्य शब्द व्यापक है, इसमें पूरे जीवन की अभिव्यक्ति होती है। इसमें संपूर्ण ज्ञान की चेतना का बोध होता है। साहित्य का आधार जीवन है। जीवन बहुमुखी है। साहित्य शब्द की उत्पत्ति दो शब्दों से मिलकर हुई है। पहला शब्द है,'स' जिसका मतलब होता है 'साथ–साथ', जबकि दूसरा शब्द है 'हित' अर्थात कल्याण। इस तरह साहित्य का अभिप्राय ऐसी लिखित सामग्री से है, जिसके हर शब्द और हर एक अर्थ में लोकहित की भावना समाई रहती है। हर युग का साहित्य अपने युग के प्रगतिशील विचारों द्वारा किसी न किसी रूप में अवश्य प्रभावित रहता है। साहित्य से ही देश का इतिहास,उसकी गरिमा, संस्कृति और सभ्यता,वहाँ के पूर्वजों के विचारों एवं अनुसंधानों,रीति रिवाजों रहन–सहन तथा परंपराओं आदि को पहचाना जाता है।

साहित्य के माध्यम से हमारे देश की संस्कृति को पहचाना जाता है। प्राचीन काल से चली आ रही परंपराएँ हमारे देश में किस तरह की संस्कृति थी यहां के लोग किस तरह के लोकनृत्य करते थें, यह सब हम साहित्य के माध्यम से ही जान सकते हैं। साहित्य समाज के मानसिक तथा संस्कृतिक उन्नति और सभ्यता के विकास का साक्षी है। साहित्य एक ओर जहाँ समाज को प्रभावित करता है,वहीं दूसरी ओर वह समाज से प्रभवित भी होता है।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी एक जगह पर लिखते हैं–'' साहित्य सामाजिक मंगल का विद्यालय है, यह सत्य है कि व्यक्ति विशेष की प्रतिभा से ही साहित्य रचीत होता है, किन्तु और भी अधिक सत्य यह है कि प्रतिभा सामाजिक प्रगति की ही उपज है।'' समाज मे रहकर ही वहाँ की संस्कृति रीति–नीति,धर्म–कर्म और व्यवहार वातावरण का बोध होता है। एक जगह बिहारी कहते हैं–

''नहीं पराग नहीं मधु,नहीं विकास इहिं काल।
अली कली ही सौ बध्यों, आगे कौन हवाल।''

राजा जयसिंग अपने कर्तव्य को भूल गया, तब उसके जीवन में बदलाव लाने का काम कवि बिहारी ने किया। तात्पर्य यह है कि समाज के विचारों,भावनाओं और परिस्थितियों का प्रभाव साहित्यकार और उसके साहित्य पर निश्चित रूप से पड़ता है। साहित्य अपने विकास मुखर करता हैं और समाज को एक नई दिशा प्रदान करता है।

संत कबीर ने अपने समय में आडबंर, सामाजिक कुरीतियों और मान्यताओं का विरोध किया। उन्होंने समाज में हो रहे अत्याचारों का विरोध किया। एक जगह पर कहते हैं –

''पाथर पूजे हरि मिलें तो मैं पूजूँ पहाड।
ताते यह चाकी भली पीस खाय संसार।।''



Scanned with CamScanner

हमारे देश में साहित्यकारों के द्वारा लिखे गये साहित्य को जानकर हम हमारे पूराने पूर्वजों के बारे में जान पाते हैं कि वह किस प्रकार लोकनृत्य, लोकनाटय, लोकसंगीत, और लोकगाथाएं करते थे। और अपनी इस जिंदगी को खुशहाल बनाकर जीते थे । आज का साहित्य हमारे जीवन में बड़ा महत्व रखता है। प्रेमचंद ने किसान मजदूर की पीड़ा एवं संवेदना का चित्रण करते हुए लिखा है– '' जो दलित है, पीड़ीत है, संत्रास्त है उसकी साहित्य के माध्यम से हिमायत करना साहित्यकार का भौतिक दायित्व है।''

साहित्य संस्कृति का रक्षक और भविष्य का पथप्रदर्शक है। संस्कृति द्वारा संकलित होकर ही साहित्य 'लोकमंगल' की भावना से समान्वित होता है। सुमीत्रानंदन पंत की पंक्तियाँ इस संदर्भ में कहती है–

''वही प्रज्ञा का सत्य स्वरूप,
ह्दय में प्रणय अपार
लोचनों में लावण्य अनूप
लोक सेवा में शिव अविकार।

संस्कृति की विभिन्नताएँ मनुष्यता बनकर एक हो जाती है। इस एकतत्व की मनुष्यता को रचने का काम साहित्य और कलाएँ करती है। इसलिए संस्कृति को उसके गहरे अर्थ संदर्भों में समझना होगा। कोई भी देश उसकी संस्कृति से ही पहचाना जाता है। वहाँ के लोगों की वेशभूषा,सभ्यता, वस्त्र निर्माण के परिवर्तन होते रहते हैं। लेकिन वस्त्रों में शील और मर्यादा, उनका सौंदर्य उन्हें ॠतूओं के अनुरूप धारण करना संस्कृति है। संस्कृति का मूल स्त्रोत हमारी यह विचार शक्ति है, जो सभ्य और असभ्य संरचना आदि में भेद दिखाती है।

साहित्य में हम भाषा शैली, शब्द विन्यास, आदि को देखते हैं, तब भाषा का भौतिक रूप होता है। लेकीन लेखक उसमें विचार रखता है, अपनी कल्पना से सौंदर्य, प्रकृति, और समाज के समस्त लोकाचारों विश्वासों को अभिव्यक्त करता है। तो वह साहित्य सृजन भी करता है।

भारतीय संस्कृति में वेद, उपनिषद, काव्य, बौध्द, जैन वांग्मय, अवेस्ता, आदि साहित्य की परिधि में रखे जाते हैं। रामायण, महाभारत, भले ही उत्कृष्ट काव्य रचनाएँ है, लेकिन साहित्य को अतीत के सहारे पहचानने के बजाय हमें अपने ऐतिहासिक और आधुनिक क्रम को भी देखना परखना होता है।

कोई भी देश अपनी भाषा में साहित्य का सृजन करता है, वह केवल उपन्यास, कहानी, काव्य, नाटक, आदि का सृजन नहीं करता बल्कि उसका सृजन लोकोन्मुखी होता है। और संस्कृति से अपनी अस्मिता उन्मुखी होता है। सांस्कृतिक पक्ष एक प्रकार जन,जमीन,उसकी कर्म और चिंतन प्रणाली से जुड़ा होता है। संस्कृति एक प्रकार का जीवन व्यापार या जीवन व्यवहार है। लोकस्मृति में स्थापित होना ही संस्कृति के निर्माण की प्रक्रिया है। सभ्यता के तमाम बदलाव संस्कृति तब तक नहीं बनते जब तक वे स्थायी रूप ग्रहण न कर ले।

अंत में यही कहा जा सकता है की हमारी भारतीय संस्कृति के नाम पर धर्म, धर्मग्रंथों का ही पगडा रहा है। वह हमें अपनी अस्थाओं की सीमाओं में रहने का संस्कार देती है। इसलिए हमे अपने संस्कृतिक पक्ष में जन,जमीन, राजनीति को नहीं रखना चाहिए। अपनी भाषाओं को जीवित रखने के लिए उत्कृष्ट साहित्य का निर्माण होना आवश्यक है। अपने और अन्य के विचारों की रक्षा एवं सम्मान करना होगा। तभी तो हमारी संस्कृति अजरामर रहेगी।

संदर्भ:–

१. साहित्य और संस्कृति – रामविलास शर्मा इलाहाबाद।
२. हिंदी साहित्य की भूमीका– हजारी प्रसाद द्विवेदी।
३. हिंदी साहित्य का इतिहास– रामचंद्र शुक्ल।



Scanned with CamScanner

श्री योगेश्वरी शिक्षण संस्था

शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में

हिंदी विभाग, स्वामी रामानंद तीर्थ महाविद्यालय, अंबाजोगाई

तथा

महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी

के संयुक्त तत्यवधान में आयोजित

एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

# लोकसाहित्य

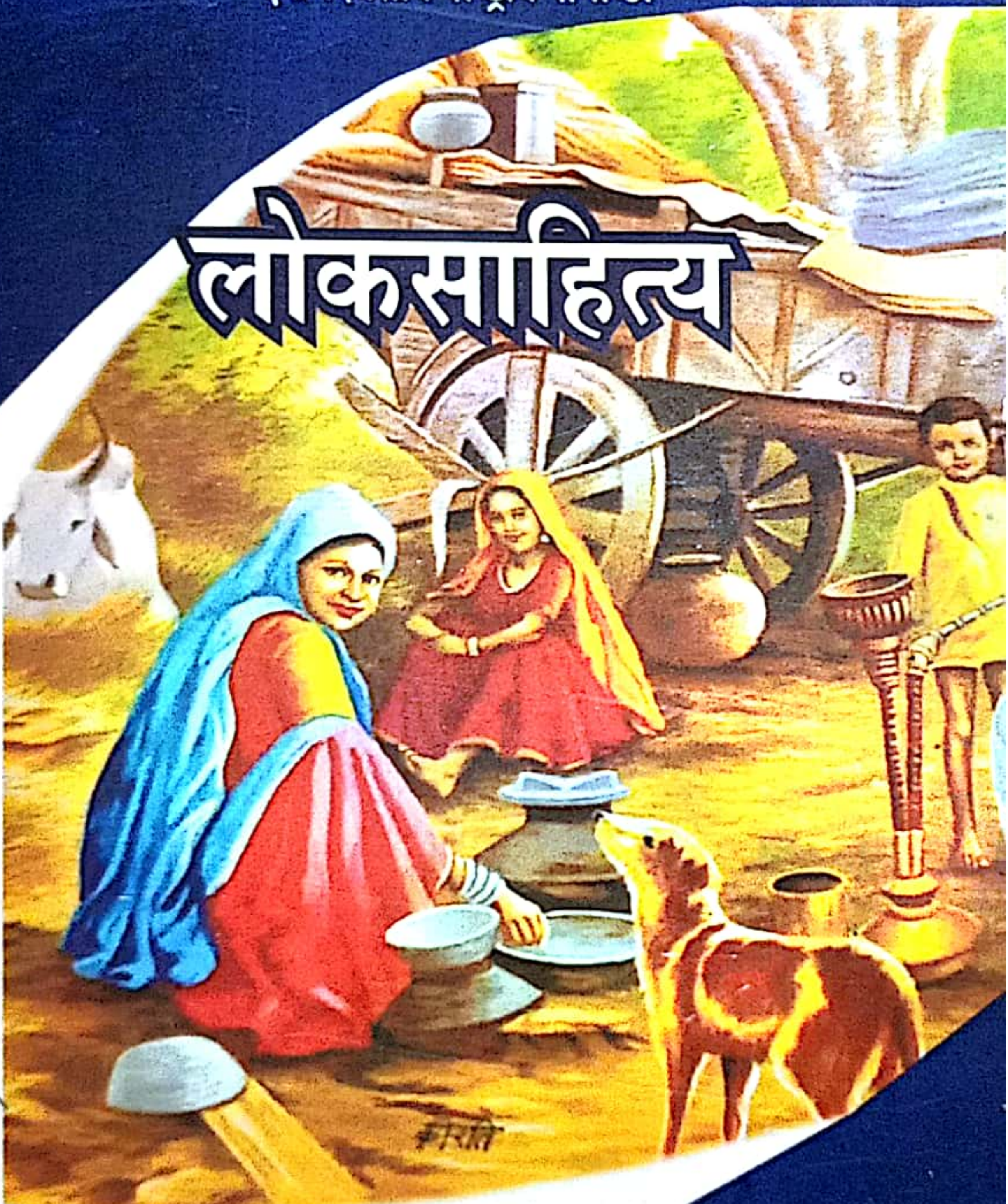


संपादक

डॉ. गणपत राठोड

सह संपादक

डॉ. राम बडे



Scanned with CamScanner

| | | |
|---|---|---|
| 3 लोकसाहित्य स्वरूप एवं बंजारा लोकगीत | डॉ. शेषराव लिंबाजी राठोड | 122 |
| 4 अहिराणी बोली के लोकगीतों में अभिव्यक्त नारी संवेदना | प्रा. डॉ. चित्रा धामणे | 125 |
| 5 परदेशी समाज के लोकगीतों में चित्रित पारिवारिक व्यवस्था | डॉ. अर्चना परदेशी | 129 |
| 6. लोकगीतों में नारियों का योगदान | डॉ. गणपत श्रीपतराव माने | 133 |
| 7 लोकगीत : लोरी | डॉ.पंडित बन्ने | 138 |
| 8. लोकगीतों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि | डॉ. मुरलीधर लहाडे | 141 |
| 9 लोकसाहित्य के प्रमुख क्षेत्र | डॉ. राम सदाशिव बडे | 145 |
| 10 रेणु की कहानियों में लोकगीत | डॉ.कांचन बाहेती (रांदड) | 149 |
| 11 लोकगीत और समाज | जाधव यशवंत भिमाशंकर | 153 |
| 12 समाज एवं लोकगीत का अंतर्सम्बन्ध | डॉ.के.बी.गंगणे | 155 |
| 13 लोकगीतों में नारियों का योगदान (बंजारा तीज त्यौंहार विशेष संदर्भ) | प्रा.डॉ.वंदन बापुराव जाधव | 158 |
| 14. भारतीय लोकगीत की स्वरूपगत् अवधारणा | प्रा. भास्कर शिवलाल राठोड | 162 |
| 15 "गोंधली समाज और लोकगीत." | शिंदे सुनिल सोपानराव | 165 |
| 16 हिन्दी साहित्य में मुस्लीम लोकगीतों का महत्व | प्रा.मुजावर एस.टी . | 169 |
| 17 अहीर गवली समाज के लोकगीत और समाज | डॉ. चंद्रशेखर जाफरे | 172 |
| 18 मराठवाडा के लोकगीतों में अभिव्यक्त डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर का व्यक्तित्व | डॉ.संजय जाधव | 177 |
| 19 बंजारा ढाडी जनजाति : संस्कृति और लोकगीत | प्रा.पवार परमेश्वर खेमाजी | 183 |
| 20 समकालीन संदर्भ में लोकसाहित्य एवं लोकगीत | प्रा.उषमवार जी.बी. | 187 |
| 21 भूमंडलीकरण के परिप्रेक्ष्य में लोकगीत का प्रभाव | प्रा. युवराज राजाराम मुळये | 190 |
| 22. पत्थर को भी पिघला दे : बंजारों का 'ढावलो' गीत | प्रा. सुर्यकांत चव्हाण | 193 |
| 23 घुमंतू जनजातियों के लोकगीतों मे नारियों का योगदान | अविनाश जाधव | 196 |
| 24 'आंध' आदिवासी लोकगीत: कृषि गीतों के विशेष संदर्भ में | विश्वनाथ महादु देशमुख | 200 |
| 25 लोकसाहित्य में लोकगीतों का स्थान | डॉ. संगिता लोमटे<br>डॉ. शिवाजी वैद्य | 205 |
| 26 लोकगीत और समाज | डॉ. अरविंद घोडके | 209 |
| 27 बंजारा लोकगीत : परंपरा और संस्कृति की उपज | संजीवनी जनार्धन राठोड | 212 |
| 28 कहार समाज के लोकगीत | कुमारी रोहिणी पोते | 217 |
| 29 मुस्लीम विवाह गीत | शेख शकिला अल्ताफ हुसेन | 221 |



Scanned with CamScanner

# "गोंधली समाज और लोकगीत."

शिंदे सुनिल सोपानराव

15

गोंधली जनजाति यह एक घुमन्तु अवस्था में भटकनेवाली देवियों की आराधना करनेवाली एक उपासक जनजाति मानी जाती है। इस जनजाति का इतिहास प्राचीन काल से देखने को मिलता है। यह जनजाति मुख्यतः तुलजापूर की तुळजाभवानी और माहुर की रेणुकामाता की उपासना करती है। इस जाति का चित्रण इ.स. पूर्व १००० साल से देखने को मिलता है।महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश, मध्यप्रदेश एवं भारत के विभिन्न क्षेत्र में निवास करती है। इस जनजाति की जनसंख्या हर क्षेत्र में कम आधिक मात्रा में पाई जाती है। यह जनजाति अन्य घुमन्तू जनजातियों के समान व्यवहार नही करती. बल्कि हिंदु मराठा समाज के समान व्यवहार करती है। गोंधली जनजाति के लोग रेणुकामाता, भवानीमाता, यमाई, मरियामा, जगदंबा, दुर्गामाता, अंबाई, योगेश्वरी तथा अन्य देवियों की आराधना करती है। यह जनजाति देवियों की लोकउपासक जनजाति कहलाती है। यह लोग कुलाचार के रूप में देवियों के नाम गोंधल विधि करते है। गोंधल विधि समाज में सामाजिक और धार्मिक दृष्टियों से महत्वपूर्ण विधि मानी जाती है। यह जनजाति एक घुमन्तु जनजाति है इस जनजाति के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए डॉ. मांडे प्रभाकर लिखते है- "गोंधळी ही देवीच्या भगताची भटक्याचे जीवन जगणारी एक जात आहे. गोंधळी जातीचे लोक देवीच्या उपासनेच्या स्वरूपाचा एक कुलाचार पार पाडतात. त्यालाच गोंधळ असे म्हणतात. गोंधळी जातिचे लोकचं गोंधळ हे विधिनाट्य सादर करू शकतात. या जातीचे लोक महाराष्ट्रात, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश या प्रांतात विशेष करून आढळतात." यह जनजाति अपनी लोकसंस्कृति के अनुरूप आज भी परंपरावादी जीवन यापन करती है। देवियों का गोंधल विधि संपन्न करने की पंरपरा का चित्रण अनेक प्राचीन ग्रंथो में मिलता है। 'रेणुका महात्म्य' इस ग्रंथ में गोंधल विधि और गोंधली का चित्रण मिलता है। दिनकर स्वामी तिसगांवकर ने स्वानुभव दिनकर ग्रंथ में गोंधल विधि की व्युत्पत्ति के संदर्भ में चित्रण किया है।

"सहस्त्रार्जुने मायाबापा गांजिले।<br>
मातृशरीरी येकवीस घाय केले।<br>
म्हणोनि येकवीस वेळा निक्षत्री केले।<br>
महिमंडल फारशरामें<br>
आणि सहस्त्रार्जुन सपरिवारी मारिला।



Scanned with CamScanner

त्याचिया धडाचा चोंडका केला।
मातापूरी फरशरामें गोंधळ घातला
ये माये, ये माये, बोभाईले।।"

**गोंधली लोकगीतों का उद्‌भव :**

गोंधली जनजाति के लोगगीतों का उद्‌भव प्राचीन काल से माना जाता है। मानव ने जब से भाषा सीखी तभी से लोकगीतों का प्रचलन हुआ। लोकगीत एक पीढी से दूसरी पीढी तक मौखिक रूप से आते हैं। लोकगीतों का रचियता अज्ञात होता है। इस जनजाति का उद्‌भव प्राचीन काल के ग्रंथो, पुराणों, वेदों, उपनिषदों से हुआ है। यह जनजाति देवी पूजक होने के कारण गोंधल विधि किया करती हैं। गोंधल विधि में लोकगीत गाये जाते हैं। लोकगीतों के बिना गोंधल विधि का प्रारंभ गण से किया जाता है। 'गण' गाने की परंपरा अतिप्राचीन है इसलिए इस जनजाति के लोकगीतों की पंरपरा अतिप्राचीन है। देवियों के गोंधल विधि में गण इस प्रकार गाया जाता है।

"साती समींदरा, गोंधळा ये,
नवलाख तारांगणा, गोंधळा ये,
धरती माते, गोंधळा ये,
आकाशी माते गोंधळा ये,
भक्ताच्या गणा, गोंधळा ये,
तेतीस कोटी देवी देवता गोंधळा ये,
माहुर ची रेणुका गोंधळा ये,
तुळजापुरची भवानी माते गोंधळा ये,
राहिले साहिले गोंधळा ये"

इस विधि में आने के लिए सभी देवी - देवताओं को आमंत्रित किया जा रहा है। प्राचीन काल से ही देवी-देवताओं के प्रति जनमानस में आस्था है। अनादिकाल से इस जनजाति में लोकगीत गाने की परंपरा आज देखी जाती है। यह भी दिखाई देती है ।

**गोंधली के गोंधल लोकगीत :**

तुलजापूर की तुळजाभवानी माहुर की रेणुकादेवी तथा अन्य देवियों की आराधना करनेवाली लोक उपासक जनजाति गोंधली कहलाती है । देवियों की लोकोपासकों में गोंधली जनजाति का नाम आदर के साथ लिया जाता है। गोंधली लोग गोंधल विधि में अनेक प्रकार के लोग गीत गाते हैं । इनके लोकगीत कथात्मक, उपदेशपरक, शाहीरी, पोवाडा, कवन तथा



Scanned with CamScanner

व्यंग्यात्मक प्रकार के लोकगीत गोंधली नायक गाता है। गोंधल विधी विवाह से पूर्व विवाह के बाद, जन्म संस्कार, उपनयन संस्कार, घर की वास्तु के अवसर पर एवं कोई मनोकामना पूरी होने पर यह विधि करने की परंपरा दिखाई देती है । कई लोक यह विधी कुलाचार के रूप में भी करते हैं । इस विधि में ज्यादात्तर देवी - देवताओं संबंधी लोकगीत गाये जाते हैं ।

गोंधल विधि में गोंधली जनजाति का एक संच होता है। इस संच में पाँच से सात लोग होते हैं । लोकगीत गाणेवाले को नायक एवं मुखियाँ कहा जाता है। मुख्य नायक लोकगीत गाता है। उसको साथ अन्य गोंधली लोग देते हैं । जिसमें अन्य सभी गोंधली व्यंग्य कसता है। गोंधल विधि में पहली बार गण का गायण होता है। बाद में अन्य प्रकार के गीत गाये जाते है। गण होने के बाद देवीका आवाहण करते हुए गोंधळी कहते हैं -

"तुळजापूरची भवानी माते, गोंधळाला यावे,
माहूर वासीनी रेणुकामाते, गोंधळाला यावे,
अनुसया दत्तात्रया, गोंधळाला यावे,
औंढयाच्या नागनाथा, गोंधळाला यावे,
परळीच्या वैजनाथा, गोंधळाला यावे,
भोगावच्या आये, गोंधळाला यावे,
तेहत्तीस कोटी देवी-देवता, गोंधळाला यावे,
राहिले- साहिले, गोंधळाला यावे."

गोंधली जनजाती का मुख्य व्यवसाय देवियों के नाम लेकर भिक्षा मांगते जीवन - यापन करते हैं । भिक्षा मांगते समय वे इस प्रकार के गीत गाते हैं :-

"अंबे काय मागू , मागन गं,
काय मागू, मागन गं,
कपाळी कुंकू जलमाला जाऊ दे,
हेच माझ मागन गं,
हातचा चुडा जलमाला जाऊ दे,
हेच माझं मागनं गं,
अंबे हेच मागन माझं गं."

इस जनजाति में विवाह की विधियाँ तीन तीन दिन तक चलती है विवाह के दिन गाँव की नारीयाँ कुम्हार के पास से कुछ मटकियाँ लाती है उस मटकियों पर देवक्या नामक व्यक्ति नक्षीकाम करता है।इस समय नारियाँ निम्न लोकगीत गाती है।



Scanned with CamScanner

"देवक तोड देवक्या,
करीन सायस,
बाई देवक्याच्या,
खंद्ययावर कुऱ्हाड,
गेला आष्टयाच्या,
बनात,
** ** **
हळदी चढाई सारीरात,
हळदी की रात बडी,
कवळी मेंहदी...
क्या खूब रंग चढी,"

विवाह संपन्न होने के बाद वर की बारातजब गाँव में निकाली जाती है। बारात लौटकर घर आने पर वर को बहन द्वार पर खडी होकर भाई से कहती है कि, भैय्या आपकी होनेवाली पहली लडकी मेरे लडके को देने के लिए हट करती है। इस आश्य का यह लोकगीत

"बंधू लेक दयावी,
भाची सुन व्हावी,
टिका देतो बाई,
दार सोड डाळिंबी,
दागिन नगं रं दादा,
भाची सुन व्हावी."

विवाह के दिन विभिन्न प्रकार के लोकगीत गाये जाते है। देवी के नाम पर दीपक में वर-वधू रातभर जागकर मिठा तेल डालते है। इस समय सभी लोक मासांहारी भोजन के साथ मद्यपान भी करते है। रातभर गोंधली लोक नाचते गाते हुए कहते हैं।

"आराधी निघालं जोगव्याला,
आणि गेले रानाच्या वाड्याला,
राजा बोलतो प्रधानाला,
धरा धरा हो आराध्याला,
बांधा चंदन खांबाला."

गोंधली जनजाति के लोग होली, दीपावली, दशहरा त्यौहार हर्षोल्लास के साथ



Scanned with CamScanner